

एआई शोधकर्ताओं को करोड़ों रुपए वेतन दे रही हैं कंपनियां

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस आज ऐसी टेक्नोलॉजी बन गई है, जिसे जानने वाले दुनिया में बहुत कम हैं। जो इस पर काम कर रहे हैं, उन्हें कंपनियां मुंह मांगे वेतन पर अपने यहां रखना चाहती हैं। हालांकि इसके शीर्ष विशेषज्ञों में कई ऐसे

हैं जिन्होंने स्पष्ट कर दिया है कि वे इस टेक्नोलॉजी को मानव जाति की भलाई के लिए इस्तेमाल करना चाहते हैं। वे उन कंपनियों के साथ काम नहीं करेंगे, जो अपने हितों की खातिर लोगों के लिए खतरनाक टेक्नोलॉजी विकसित कर रही हैं।

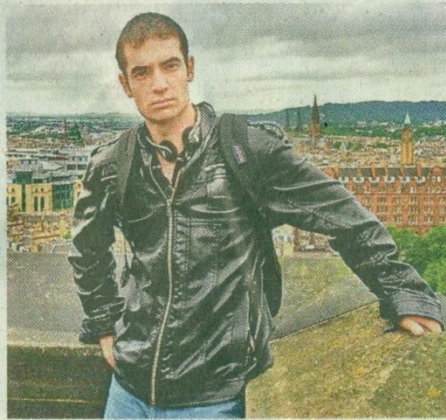
• सैड मेट्रज, एआई टेक्नोलॉजी के विशेषज्ञ

इन दिनों सिलिकॉन वैली की लगभग सभी आईटी कंपनियों में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) के भविष्य पर बातें हो रही हैं। कुछ कंपनियां ऐसी भी हैं जिन्होंने सॉफ्टवेयर का काम छोड़कर एआई पर फोकस कर दिया है। एआई पर जहां जितना शोध हो रहा है, उसे उतना ही महत्व मिल रहा है। कंपनियां ऐसे शोधकर्ताओं को करोड़ों रुपए दे रही हैं, जो एआई पर अच्छा शोध कर रहे हैं।

पहले सिलिकॉन वैली का वाला वेतन और बोनस गोपनीय रहता था, लेकिन अब ऐसा नहीं है। एआई पर रिसर्च करने वाली कंपनी 'ओपनएआई' ने टैक्स की जानकारी के दौरान अपने आंकड़े सामने रखे हैं। उससे पता चला कि उनके यहां इलियै सुत्सकेवर शीर्ष शोधकर्ता हैं, उन्हें वर्ष 2016 में 12 करोड़ रुपए से अधिक वेतन दिया गया। वहीं एक अन्य शोधकर्ता इथान गुडफेलो को 5.20 करोड़ रुपए से अधिक वेतन दिया गया। दोनों ही शोधकर्ता इससे पहले गूगल में काम करते थे। इसी क्षेत्र में एक अन्य बड़ा नाम पीटर अब्बील का है, उन्हें 2.75 करोड़ रुपए वेतन दिया गया था। इसके पहले वे यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया में प्रोफेसर हुआ करते थे।

ओपनएआई के लिए टैक्स फॉर्म में यह जानकारी देना इसलिए जरूरी थी क्योंकि वह गैर लाभकारी कंपनी है और एआई में शोध कार्य करती है। आश्चर्य की बात यह है कि गैर लाभकारी कंपनी इतनी अधिक राशि वेतन में दे रही है। इससे दुनिया को भी पता चल गया कि एआई पर शोध करने वाली प्रतिभाओं को कितना वेतन दिया जा रहा है। हालांकि, इसमें एक महत्वपूर्ण बिन्दु यह है कि गैर लाभकारी कंपनी को इतनी राशि कैसे प्राप्त हो रही है क्योंकि वह शेयर भी नहीं बेच सकती। एआई के शोधकर्ताओं का वेतन रॉकेट की गति से बढ़ रहा है, ऐसा इसलिए क्योंकि आज इस टेक्नोलॉजी को

ओपनएआई ऐसी कंपनी है जो ऐसी टेक्नोलॉजी विकसित नहीं करना चाहती जो मानव जाति के लिए खतरनाक बन जाए। वह इसकी मदद से लोगों की भलाई के काम करने के मिशन पर है।



ये इलियै सुत्सकेवर हैं, जो 'ओपनएआई' में शीर्ष शोधकर्ता हैं। पहले वे गूगल में काम करते थे, ओपनएआई ने इन्हें 2016 में 12 करोड़ रुपए वेतन दिया।

जानने वाले बहुत कम हैं जबकि, एआई पर काम करने वालों की हजारों कंपनियों को जरूरत है। कनाडा स्थित स्वतंत्र लैब 'एलिमेन्ट एआई' ने बताया कि दुनियाभर में गंभीर रूप से एआई पर शोध करने वाले 22 हजार लोगों की जरूरत है, यह संख्या पिछले एक वर्ष की तुलना में दुगुनी है। एआई स्टार्टअप 'स्काईमाइन्ड' के संस्थापक एवं चीफ एग्जीक्यूटिव क्रिस निकोल्सन भी कहते हैं, यहां शोधकर्ताओं की मांग बहुत अधिक है और आपूर्ति बहुत कम। यह मांग विश्वविद्यालयों एवं सरकारों के लिए महत्वपूर्ण मुद्दा है। उन्हें भी एआई समझने वाले प्रोफेसर चाहिए जिससे वे बच्चों को पढ़ा सकें और एआई शोधकर्ताओं की नई पीढ़ी तैयार कर

सकें। सरकारों को भी इनकी जरूरत है ताकि वह इनका उपयोग सैन्य कामकाज और दवा की खोज में कर सकें। लेकिन, ऐसा संभव नहीं लगता कि सरकारें निजी क्षेत्र की तुलना में एआई शोधकर्ताओं को उतना वेतन दे पाएंगी।

वर्ष 2015 में इलेक्ट्रिक कार निर्माता टेस्ला के चीफ एग्जीक्यूटिव इलोन मस्क और ओपनएआई के शीर्ष नेतृत्व सिलिकॉन वैली के कई दफ्तरों में चक्कर लगा चुके थे। वे गूगल और फेसबुक में काम करने वाले कई शोधकर्ताओं को अपने यहां ले आए। ये दोनों कंपनियां ही इंडस्ट्री में एआई पर सबसे ज्यादा काम कर रही हैं। जहां तक वेतन और बोनस की बात है, इंटरनेट कंपनियां पर्याप्त शेयर देकर अंतर समाप्त कर देती हैं। ओपनएआई जैसी कंपनियां अपने कार्य बाहरी दुनिया के साथ शेयर करती हैं और लगातार ऐसी टेक्नोलॉजी विकसित करने से बचती हैं, जो लोगों को लिए खतरनाक साबित हो। ओपनएआई के शीर्ष शोधकर्ता इलियै सुत्सकेवर कहते हैं, मैंने कई बड़ी आईटी कंपनियों के ऐसे प्रस्ताव खारिज कर दिए, जिनमें मुझे लाखों डॉलर वेतन मिलता। मैंने ओपनएआई को चुना क्योंकि मुझे भरोसा है कि हम ऐसी पावरफुल एआई विकसित कर लेंगे, जिसका लाभ मानवता को मिलेगा।

ओपनएआई ने अपने पहले साल की शुरुआत 71 करोड़ रुपए से की थी, जिसमें 45.5 करोड़ रुपए केवल वेतन में चले गए थे। आज वहां 52 लोग काम करते हैं। सिलिकॉन वैली की आईटी कंपनियों में जिन्हें एआई का नॉलेज है, लेकिन दूसरे कार्यों का नहीं, उन्हें 2 से 3.25 करोड़ रुपए सालाना वेतन मिल जाता है।

गूगल और फेसबुक से इंटरैक्शन करके ओपनएआई में काम करने वाले शोधकर्ता वोजसिच जरेम्बा कहते हैं- एआई में काम करने के लिए वेतन की कोई सीमा नहीं है। कई बड़ी कंपनियां उन्हें उनके अनुमान से दो या तीन गुना ज्यादा वेतन का प्रस्ताव कर चुकी हैं।

लंदन स्थित गूगल की एआई लैब डीपमाइंड में 400 लोग काम करते हैं, वर्ष 2016 में उन्हें संयुक्त रूप से 897 करोड़ रुपए वेतन दिया गया यानी प्रत्येक को औसत 2.24 करोड़ रुपए सालाना। स्काईमाइंड के निकोल्सन कहते हैं- जब आप कोई सितारा चेहरा नियुक्त करते हैं, तो केवल उसे ही नियुक्त नहीं करते, बल्कि आप हर किसी को उसके जरिये आकर्षित करते हैं। आज एआई के शोधकर्ता बढ़ रहे हैं, लेकिन उतनी तेजी से नहीं जितनी जरूरत है क्योंकि एआई शुरुआती दौर से विस्तृत क्षेत्र में पहुंच रही है।

इसका यह मतलब कि कंपनियों के लिए प्रतिभावान को रोक पाना मुश्किल होगा। पिछले वर्ष यानी ओपनएआई में 11 महीने बिताकर गुडफेलो पुनः गूगल में लौट गए थे। इसी तरह अब्बील और दो अन्य शोधकर्ताओं ने रोबोटिक्स स्टार्टअप शुरू कर ली। टेस्ला में एआई के हेड के तौर पर नियुक्त होने वाले आंद्रेज केरपेथी अपनी अलग ड्राइवरलेस टेक्नोलॉजी विकसित कर रहे हैं। इलोन मस्क भी कभी ओपनएआई के बोर्ड में थे, उन्होंने अपनी प्रतिभाएं रोकने के लिए वह पद छोड़ दिया। बाद में ओपनएआई ने कहा कि इससे भविष्य में होने वाली प्रतिस्पर्धा का सामना करने में मदद मिलेगी।

© The New York Times

© The New York Times

दैनिक भास्कर से विशेष अनुबंध के तहत